आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2579 • उदयपुर, रविवार 16 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

चल पड़ी थमी हुई जिन्दगी

नरवाणा– हरियाणा के जींद जिले के नरवाना शहर में निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। संस्थान की नरवाना शाखा के तत्वावधान में सम्पन्न शिविर में 37 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर तथा 25 को कैलीपर लगाए गए। मिलन पैलेस में आयोजित शिविर के मुख्य अतिथि महंत श्री अजयगिरि जी महाराज थे। अध्यक्षता नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री भारत भूषण जी गर्ग ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जय सिंह जी गर्ग, श्री प्रवीण जी मित्तल व राकेश जी शर्मा मंच पर बिराजे थे। स्थानीय शाखा के प्रभारी श्री राजेन्द्र जी गर्ग ने अतिथियों का स्वागत किया। कृत्रिम अंग लगाने का कार्य संस्थान के टेक्नीशियन श्री भंवरसिंह जी व श्री नरेश जी वैष्णव ने किया। संचालन श्री हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने जबकि व्यवस्था में श्री मुन्नासिंह जी, भरत कुमार जी व रामसिंह जी ने सहयोग किया।

छतरपुर– केयर इंग्लिश स्कूल, छतरपुर (मध्यप्रदेश) में आयोजित शिविर में 39 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) व 9 को कैलिपर प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि डॉ. रामकुमार जी अवस्थी थे। जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में उनके साथ मंच पर रॉटरी क्लब के सचिव श्री स्वतंत्र जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री मुकेश जी सोनी, इनव्हील क्लब की अध्यक्ष श्रीमती ज्योति जी चौबे समाजसेवी श्री पंकज कुमार जी, व श्री उमेश जी ललवानी मौजूद थे। अध्यक्षता रॉटरी क्लब के अध्यक्ष श्री मुकेश जी चौबे ने की।

गुरुग्राम– वैश्य समाज की सेक्टर–4 स्थित धर्मशाला में सम्पन्न दिव्यांग जांच, ऑपरेशन, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर से बड़ी संख्या में दिव्यांग भाई–बहन लाभान्वित हुए। मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमोटिव इंडिया प्रा. लिमिटेड के प्रतिनिधि श्री विशाल जी नागदा के मुख्य अतिथ्य में सम्पन्न शिविर में 20 दिव्यांगों को ट्राइसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर, 10 को बैसाखी जोड़ी प्रदान की गई। जबकि 10 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व कैलिपर लगाने के लिए मेजरमेंट लिया गया। चार दिव्यांगों का पोलियो सुधार के लिए निःशुल्क ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। शिविर की अध्यक्षता समाजसेवी श्री रघुनाथ जी गोयल ने की। विशिष्ट अतिथि श्री रमेश जी सिंगला थे। दिव्यांगों का चयन डॉ. एस. एल. गुप्ता, टेक्निशियन नाथूसिंह जी व किशनलाल जी ने किया। अतिथियों का स्वागत स्थानीय आश्रम प्रभारी श्री गणपत जी रावल ने जबकि संचालन श्री अखिलेश अग्निहोत्री ने किया।

कांगड़ा– हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के ज्वालाजी नगर में कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। मातृ सदन सरस्वती विद्यालय परिसर के निकट सम्पन्न शिविर में 28 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) तथा 40 के पांवों में कैलिपर लगाए गए।

टेक्नीशियन श्री नरेश जी वैष्णव व श्री किशन जी लौहार ने माप के अनुसार कृत्रिम अंग फिट किए। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रेमकुमार जी धूमल थे। अध्यक्षता राज्य के पूर्व मंत्री श्री रमेश जी घवाला ने की। मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में नारायण सेवा संस्थान की हमीरपुर शाखा के संयोजक श्री रसीलसिंह जी मानकोटिया, पत्रकार श्री संजय जी जोशी, पूर्व मंत्री श्री रवीन्द्र जी रवि, समाजसेवी श्री पंकज जी शर्मा व श्री रामस्वरूप जी शास्त्री मौजूद थे। शिविर प्रभारी अखिलेश अग्निहोत्री ने अतिथियों का स्वागत एवं श्री रमेश जी मेनारिया ने आभार व्यक्त किया।

अंतहीन संभावनायें - दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्नआयाम
WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.........

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (नि:शुल्क डिजीटल स्कूल)

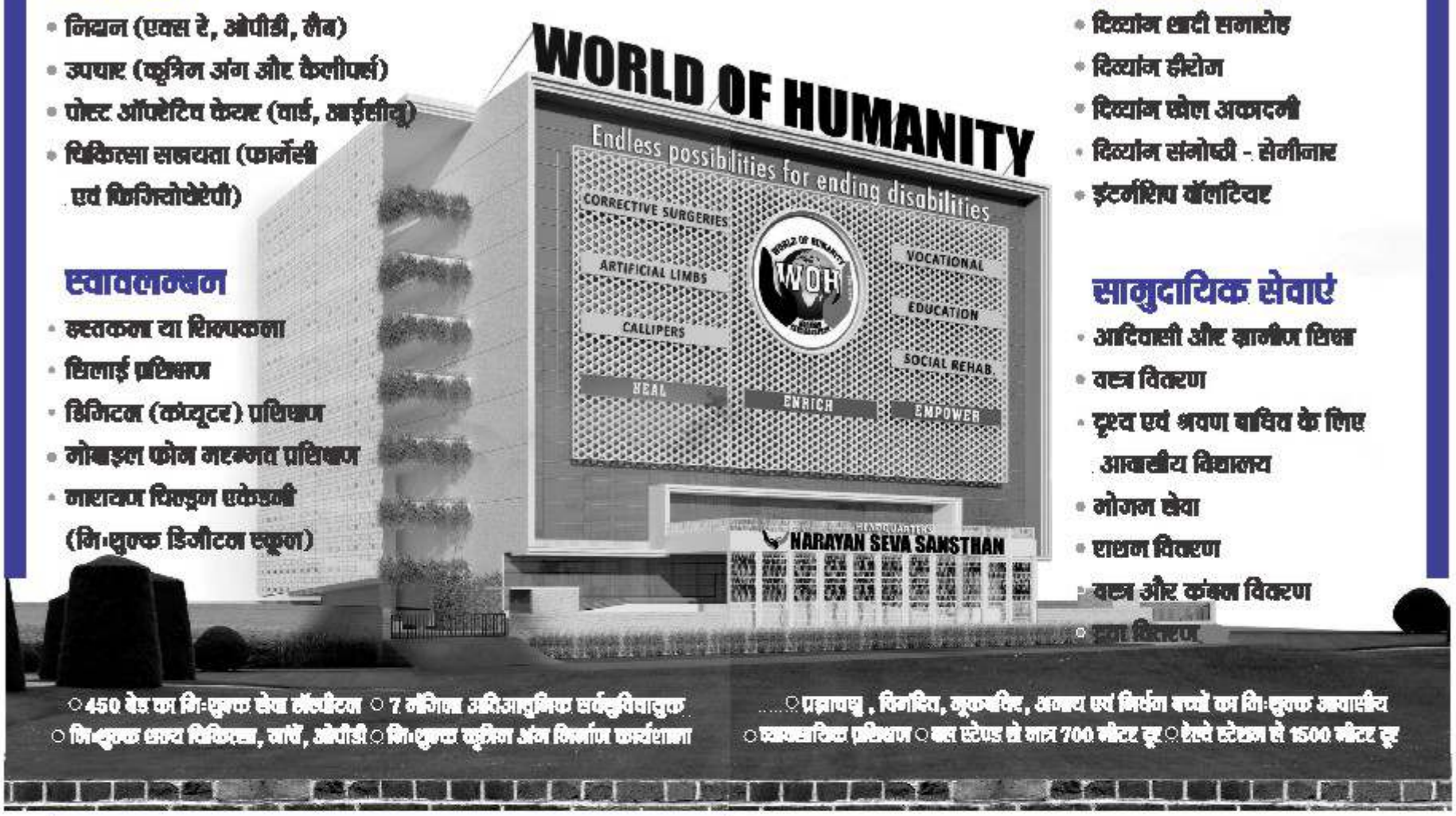

सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

○ 450 बेड का नि:शुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त ○ नि:शुल्क शल्य चिकित्सा, वार्ड, ओपीडी ○ नि:शुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला .....○ प्रज्ञाचक्षु, विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का नि:शुल्क आवासीय ○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

मानवीय सेवा हेतु करें सहयोग
दानदाताओं के सम्मान में

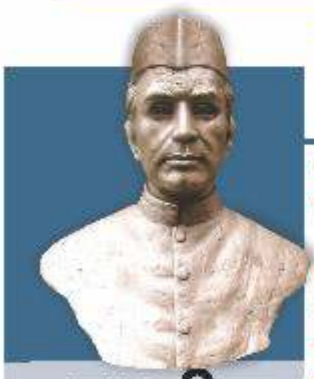

मानवीय सेवा हेतु करें सहयोग

डायमण्ड ईंट सौजन्य दाता
₹51,00,000

वक्ष प्रतिमा
अस्पताल में प्रवेश पर

- टीवी चैनलों पर 3 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में एक पृष्ठ रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत।
- 3 कृत्रिम अंग एवं चिकित्सा शिविर का सौजन्य लाभ मिलेगा।
- 4000 पेशेन्ट तक भोजन पहुंचाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

प्लेटिनम ईंट सौजन्य दाता
₹21,00,000

थ्रीडी फ्रेम
अस्पताल में प्रवेश पर

- टीवी चैनलों पर 2 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में आधा पृष्ठ रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत।
- आपश्री को 2 कृत्रिम अंग एवं चिकित्सा शिविरों में सम्मानित किया जायेगा।
- 15 दिनों में 4000 रोगी तक भोजन पहुंचाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

स्वर्ण ईंट सौजन्य दाता
₹11,00,000

फोटो फ्रेम
अस्पताल में प्रवेश पर

- टीवी चैनलों पर 1 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में क्वाटर पेज रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत।
- आपश्री को शिविरों में सम्मानित किया जायेगा।
- 7 दिन तक रोगी एवं परिचारकों को भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

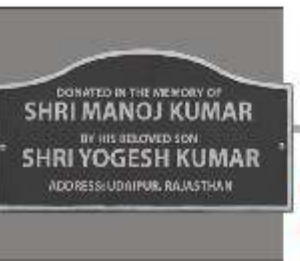

रजत ईंट सौजन्य दाता
₹5,00,000

पट्टिका पर नाम
अस्पताल में चिल्ड्रन वार्ड

- सेवा कार्यक्रमों में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत।
- रजतदाता को रोगियों का 3 दिन भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- आपश्री और आपके परिवार के लिए हर दिन होगी प्रार्थना।

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

सम्पादकीय

विश्व विघटन और संघटन का संयुक्त स्वरूप है। प्रकृति में टूटना और बनना सतत चल रहा है। पर कुछ बातें ऐसी हैं जिनका टूटना बड़ा घातक होता है। आज रिश्तेनातों में आपसी विश्वास टूट रहा है, जिससे रिश्तों में टूटन स्पष्ट दिखाई दे रही है। हम बाहरी रिश्तों की तो बात छोड़ें, जो अंतरंग रिश्ते हैं, जिनका परस्पर अन्योन्याश्रित संबंध है, वे रिश्ते भी दिन–प्रतिदिन कमजोर होकर बड़ी संख्या में टूटने लगे हैं। यह टूटन इतनी भयावह है कि अनेक आशंकाएं सिर उठाने लगी हैं।

परिवार तथा आपसी रिश्तेनातों में सामंजस्य, विश्वास और सदाशयता ध्वस्त सी हो गई है। आज परिवार की परिभाषा केवल पति–पत्नी और बच्चे रह गये हैं किन्तु इस नये परिभाषित परिवार में भी टूटन आ रही है। बच्चे, बड़ों को कालबाह्य मानकर उनसे कट रहे हैं। माता–पिता उनसे कट रहे हैं। यहाँ तक कि पति–पत्नी के रिश्तों में भी संदेह, अविश्वास तथा प्रभुत्ता की लड़ाई घुस गई है। कहाँ गया हमारा पारिवारिक सौहार्द? इस देश व समाज में कभी ऐसा तो न था? सोचें किस दुष्चक्र में फंसे हैं हम? अपना कल्याण तो सोचें।

कुछ काव्यमय

रिश्ते नाते दरकते,
दिखाते हैं अब आम।
जैसे सूरज ढल रहा,
सम्बन्धों की शाम।।
बढ़ी दरारें दिख रहीं,
रिश्ते हैं कमजोर।
यह पतंग कब की कटी,
छूटी इसकी डोर।।
ढीले सब सम्बन्ध हैं,
कैसे आय सुधार।
स्वारथ इस कर रहा,
दिन–दिन भारी भार।।
अब रिश्ते खण्डित हुए,
खण्ड–खण्ड तब्दील।
इक दूजे को सालते,
जैसी चुभती कील।।
जो दरार पैदा हुई,
कैसे वो भर पाय।
विश्वासों के सेतु ही,
अब तो पार लगाय।।

- बरदीचन्द राव

शेष जिंदगी हुई आसान

संस्थान द्वारा विभिन्न शहरों में शिविर आयोजित कर दुर्घटनाओं में अंग (हाथ–पैर) खोने वाले भाई–बहनों को निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाए गए। इससे पूर्व आयोजित शिविरों में कृत्रिम अंग बनाने के लिए प्रोस्थेटिक इंजीनियर द्वारा उनके कटे अंग की मैजरमेंट प्रक्रिया पूरी की गई।

आकोला — महाराष्ट्र आकोला स्थित संस्थान शाखा के तत्वावधान में दो दिवसीय विशाल निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। खंडेलवाल भवन में सम्पन्न शिविर के मुख्य अतिथि खंडेलवाल समाज के अध्यक्ष श्री गोपाल जी खंडेलवाल थे। अध्यक्षता दमामी नेत्र चिकित्सालय के निदेशक श्री सभापति जी ने की।

शाखा संयोजक श्री हरीश जी मानधणे ने अतिथियों का स्वागत करते हुए शिविर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसके अनुसार शिविर में 195 दिव्यांगों ने पंजीयन करवाया। जिनमें से 175 को कृत्रिम हाथ–पैर लगाए गए, जबकि 20 दिव्यांगों को टेक्नीशियन श्री नाथुसिंह जी व श्री नरेश जी वैष्णव ने कैलिपर लगाए। शिविर के विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री रणधीर जी सावरकर, उद्योगपति दीपक बाबू जी मरतीया, श्री शिवभगवान जी भाला, श्रीमति मंजू देवी जी गोयना व श्री सुभाष जी लोढ़ा थे। संचालन हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने किया।

भुज —

बालदिवस को गुजरात के भुज शहर में विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर आयोजित किया गया। श्री घनश्यामसिंह जी झाला के सहयोग से दशनाम गोस्वामी वाड़ी में संस्थान के तत्वावधान में सम्पन्न इस शिविर में 82 दिव्यांगों का पंजीयन हुआ। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद श्री विनोद जी भाई चाबड़ थे, जबकि अध्यक्षता आयोजक समाजसेवी श्री घनश्याम सिंह जी झाला ने की।

शिविर में 21 दिव्यांगों के लिए कृत्रिम अंग तथा 4 के लिए केलिपर बनाने का नाप टेक्नीशियन श्री नाथुसिंह जी ने लिया। डॉ. सिद्दार्थसंगा जी ने दिव्यांगों की जांच कर उनमें से 13 का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया। शिविर में विशिष्ट अतिथि जे.वी.सी. ग्रुप गांधीधाम की अध्यक्षता श्रीमती पारूल जी बेन सोनी श्री भरतभाई जै. जी गौड़, श्री रामभाई जी मेहता व योगेश भाई जी सोनी थे। संस्थान के राजकोट आश्रम प्रभारी श्री तरुण जी नागदा ने अतिथियों का स्वागत–सत्कार किया। संचालन व व्यवस्था में प्रभारी हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने सहयोग किया।

खुद को टटोलें

दो आदमी यात्रा पर निकले। दोनों की मुलाकात हुई। दोनों यात्रा में साथ हो गए। सात दिन बाद दोनों के पृथक होने का समय आया तो एक ने कहा, भाईसाहब! एक सप्ताह तक हम दोनों साथ रहे। क्या आपने मुझे पहचाना ? दूसरे ने कहा, नहीं, मैंने तो नहीं पहचाना। वह बोला, माफ करें मैं एक नामी ठग हूं। लेकिन आप तो महाठग हैं। आप मेरे भी उस्ताद निकले। कैसे? कुछ पाने की आशा में मैंने निरंतर सात दिन तक आपकी तलाशी ली, मुझे कुछ भी नहीं मिला। इतनी बड़ी यात्रा पर निकले हैं तो क्या आपके पास कुछ भी नहीं है ?

बिल्कुल खाली हाथ हैं? नहीं, मेरे पास एक बहुमूल्य हीरा है और थोड़ी–सी रजत मुद्राएं। तो फिर इतने प्रयत्न के बावजूद वह मुझे मिली क्यों नहीं? बहुत सीधा और सरल उपाय मैंने काम में लिया। मैं जब भी बाहर जाता, वह हीरा और मुद्राएं तुम्हारी पोटली में रख देता था। तुम सात दिन तक मेरी झोली टटोलते रहे। अपनी पोटली संभालने की जरूरत ही नहीं समझी। तुम्हें मिलता कहां से? कहने का अर्थ यह कि हम अपनी गठरी संभालने की जरूरत नहीं समझते। हमारी निगाह तो दूसरों के झोले पर रहती है। यही हमारी सबसे बड़ी समस्या है। अपनी गठरी टटोलें, अपने आप पर दृष्टिपात करें तो अपनी कमी समझ में आ जाएगी। यह समस्या सुलझा सकें तो जीवन में कहीं कोई रुकावट और उलझन नहीं आएगी।

पांच दियों की कथा

एक घर में 'पांच दिए' जल रहे थे। एक दिए ने कहा– इतना जलकर भी 'मेरी रोशनी की लोगों को 'कोई कदर' नहीं है... तो बेहतर यही होगा कि मैं बुझ जाऊं। वह दिया खुद को व्यर्थ समझ कर बुझ गया। जानते हैं वह दिया कौन था ? वह दिया था 'उत्साह' का प्रतीक यह देख दूसरा दिया जो 'शांति' का प्रतीक था कहने लगा– मुझे भी बुझ जाना चाहिए।

निरंतर 'शांति की रोशनी' देने के बावजूद भी 'लोग हिंसा कर रहे हैं। और 'शांति' का दिया बुझ गया । उत्साह' और 'शांति' के दिये के बुझने के बाद, जो तीसरा दिया 'हिम्मत' का था, वह भी अपनी हिम्मत खो बैठा और बुझ गया।

उत्साह', 'शांति' और अब 'हिम्मत' के न रहने पर चौथे दिए ने बुझना ही उचित समझा। चौथा दिया 'समृद्धि' का प्रतीक था। सभी दिए बुझने के बाद केवल 'पांचवां दिया' 'अकेला ही जल' रहा था। हालांकि पांचवां दिया सबसे छोटा था मगर फिर भी वह 'निरंतर जल रहा' था।

तब उस घर में एक 'लड़के' ने प्रवेश किया। उसने देखा कि उस घर में सिर्फ 'एक ही दिया' जल रहा है। वह खुशी से झूम उठा। चार दिए बुझने की वजह से वह दुःखी नहीं हुआ बल्कि खुश हुआ। यह सोचकर कि कम से कम एक दिया तो जल रहा है। उसने तुरंत पांचवां दिया उठाया और बाकी के चार दिए फिर से जला दिए, जानते हैं वह 'पांचवां अनोखा दिया' कौन सा था? वह था उम्मीद का दिया... इसलिए अपने घर में और अपने मन में हमेशा उम्मीद का दिया जलाए रखिये, कि कुछ अच्छा होगा। चाहे 'सब दिए बुझ जाए' लेकिन 'उम्मीद का दिया' नहीं बुझना चाहिए ।